IIT Delhi में आचार्य प्रशांत से 3 घंटे का संवाद: CGPA, करियर, आजादी, AI और जिंदगी के मकसद पर तीखे सवाल

Authored By: रवीन्द्र सिंह • Edited By: अक्षय श्रीवास्तव | नवभारतटाइम्स.कॉम • 4 Oct 2026, 10:35 pm IST

Subscribe YouTube 12M

आईआईटी दिल्ली जैसे देश के बड़े संस्थानों में पढ़ने वाले बच्चों के मन में अक्सर सवाल उठते रहते हैं। ये सवाल करियर से लेकर भविष्य तक से जुड़े होते हैं। ऐसे में IIT दिल्ली के डोगरा हॉल में आचार्य प्रशांत ने छात्रों के सवालों का जवाब देते हुए उनके मन में चल रही शंकाओं को दूर किया।



आईआईटी दिल्ली में छात्रों के सवालों का जवाब देते आचार्य प्रशांत।

नई दिल्ली: 29 सितंबर 2026 की दोपहर आईआईटी दिल्ली के डोगरा हॉल में संस्थान की ओर से दार्शनिक और लेखक आचार्य प्रशांत के साथ 'एम्पावरिंग एनकाउंटर्स' शीर्षक से एक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। करीब साढ़े तीन घंटे चले इस कार्यक्रम के केंद्र में छात्रों के करियर, महत्वाकांक्षा, असंतोष और जीवन के उद्देश्य से जुड़े सवाल रहे।कार्यक्रम में IIT Delhi के National Resource Centre for Value Education in Engineering (NRCVEE) की भी भागीदारी थी।

आयोजकों के मुताबिक आईआईटी दिल्ली के पूर्व छात्र आचार्य प्रशांत का संस्थान के साथ आठवां संवाद और इस वर्ष दूसरा कार्यक्रम था। इस बार बातचीत का फोकस आध्यात्मिकता के सामान्य सवालों के बजाय छात्रों के रोजमर्रा के दबावों, करियर, पहचान और सफलता की परिभाषा पर रहा।

बतौर पत्रकार जब मैं (रवीन्द्र सिंह) हॉल में पहुंचा, तो मंच पर एक तरफ आईआईटी दिल्ली के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस और संस्थान के नेशनल रिसोर्स सेंटर फॉर वैल्यू एजुकेशन इन इंजीनियरिंग (NRCVEE) से जुड़े भूपिंदर गोदारा थे, तो दूसरी तरफ इसी परिसर और आईआईएम अहमदाबाद

आज का AQI > नई दिल्ली

तापमान | वायु गुणवत्ता

521 AQI
PM2.5 336 µg/m³
खतरनाक

Powered By AQI

वीडियो >



US Midterm Elections: अब्दुल और ममदानी ने मनाई दिवाली, मुस्लिम नेताओं ने...



US Midterm Elections 2026: International Students Raise Concern...



थप्पड़ के बदले थप्पड़... ग्वालियर में एएसआई ने पहले उठाया हाथ तो युवक ने भी दिया करारा जवाब



US vs Pakistan: पाकिस्तान का अमेरिका को झटका! नहीं दी डिपोर्टेशन प्लेन को लैंडिंग की...



Assam Train Accident:

रेकमेंडेड खबरें >


सुबह से लेकर देर रात तक चला हाई वोल्टेज ड्रामा; राहुल गांधी की अगुवाई वाले मार्च में क्या कुछ...


आसमान में भारत का नया पहरेदार, DRDO ने 'हाई-एल्टीट्यूड एयरशिप प्लेटफॉर्म' ...

के पूर्व छात्र आचार्य प्रशांत। हॉल में करीब 1000 छात्र और लगभग 30 फैकल्टी सदस्य मौजूद थे। इनमें आईआईटी दिल्ली के अलावा आईआईटी मद्रास और दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र भी शामिल थे।

कार्यक्रम तीन हिस्सों में था। पहले करीब सवा घंटे में प्रो. गोदारा ने आचार्य प्रशांत से CGPA के दबाव, विभाग के चुनाव, आत्म-जिज्ञासा और परीक्षाओं में अनुचित साधनों के इस्तेमाल जैसे सवालों पर बातचीत की। इसके बाद करीब डेढ़ घंटे तक खुला प्रश्नोत्तर सत्र चला, जिसमें आईआईटी दिल्ली के अलावा आईआईटी मद्रास, दिल्ली विश्वविद्यालय और ग्रामीण राजस्थान से आए प्रतिभागियों ने सवाल पूछे। अंत में करीब एक घंटे तक मैंने मंच पर आचार्य प्रशांत का साक्षात्कार किया, जिसमें प्लेसमेंट, सोशल मीडिया, असफलता के डर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और महात्मा गांधी की प्रासंगिकता पर बात हुई। पूरा कार्यक्रम किसी तैयार भाषण के बजाय सवाल-जवाब के रूप में चला।

पहला दौर: CGPA, पहचान और आत्म-जिज्ञासा

बातचीत की शुरुआत प्रो. भूपिंदर गोदारा के सवालों से हुई। प्रो. गोदारा ने आईआईटी दिल्ली से ही बी.टेक और एम.टेक किया है और उद्योग जगत में करीब तीन दशक काम कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि वे इसे "CGPA ट्रैप" कहते हैं, क्योंकि परिसर में आने से पहले छात्र इससे अनजान होते हैं और फिर यही उनके कैंपस जीवन को चलाने लगता है। उनका पहला सवाल था कि छात्र अच्छे CGPA और संतुलित जीवन के बीच तालमेल कैसे बिठाएं।

आचार्य प्रशांत ने कहा कि वे सलाहों की पहले से लंबी सूची में कोई नई सलाह नहीं जोड़ेंगे, बल्कि छात्रों से यह पूछेंगे कि अच्छे कैंपस जीवन की उनकी धारणाएं आई कहां से हैं। उन्होंने कहा, "आपको कैसे पता कि आपको उसी ब्रैकेट में होना चाहिए?"

प्रो. गोदारा ने टोका कि इंटर्नशिप और नौकरियों के लिए CGPA एक अनिवार्य कसौटी है। इस पर आचार्य प्रशांत ने छात्रों को तीन श्रेणियों में बांटा। उनके मुताबिक, पांच प्रतिशत से भी कम छात्र विषय से लगाव के कारण पढ़ते हैं, करीब एक चौथाई के पास आगे के दाखिले या स्कॉलरशिप जैसी ठोस वजह होती है, और बाकी लगभग 70 प्रतिशत यह जाने बिना दौड़ते हैं कि वे किसके पीछे भाग रहे हैं।

उन्होंने CGPA की तुलना थर्मामीटर की रीडिंग से की, जो सेहत का हाल बताती है। उन्होंने पूछा, "क्या मैं इसलिए चिंतित हूं कि CGPA बताएगा कि मैं एक इंसान और छात्र के रूप में ठीक नहीं कर रहा, या इसलिए कि मुझे वह नंबर दूसरों को दिखाना है?" उनका कहना था कि अगर नंबर दूसरों को दिखाने के लिए है, तो 9.2 भी काफी नहीं पड़ता। उन्होंने कहा कि कैंपस में छात्र वही कर रहे होते हैं जो 40-50 साल का आम आदमी करता है, "यह उसी का पूर्वाभ्यास है।"

प्रो. गोदारा ने हाल की घटनाओं का जिक्र करते हुए परीक्षाओं में अनुचित साधनों के इस्तेमाल पर भी सवाल रखा। उन्होंने कहा कि कुछ छात्र तर्क देते हैं कि अगर कृष्ण ने अपने उद्देश्य के लिए हर तरह के साधन अपनाए, तो वे क्यों नहीं। आचार्य प्रशांत ने कहा कि वे इस तर्क से "पूरी तरह सहमत" हैं, लेकिन छात्र उसका सुविधाजनक आधा हिस्सा ही मानना चाहते हैं। उन्होंने कहा, "कर्म से कहीं ज्यादा कर्ता मायने रखता है। पहले कृष्ण बनिए, फिर हम आपके किसी काम पर सवाल नहीं उठाएंगे।" उनके मुताबिक, कृष्ण का उदाहरण देकर गड़बड़ी की छूट लेना "दार्शनिक रूप से अस्वीकार्य" है।

आहार से जुड़े सवाल पर आचार्य प्रशांत ने कहा कि यह विज्ञान का विषय है, आध्यात्मिक शिक्षक का नहीं। उनके मुताबिक भोजन, शरीर और मस्तिष्क पर उसके प्रभाव जैसे प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक अनुसंधान से आना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में आध्यात्मिक शिक्षकों को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। खान-पान के मामले में छात्रों को, उनके शब्दों में, ‘न परंपरावादी होना चाहिए, न स्वाद का गुलाम’, बल्कि वैज्ञानिक होना चाहिए।

दूसरा दौर: "आखिर यह दौड़ खत्म कब होगी?"

इसके बाद खुला प्रश्नोत्तर सत्र शुरू हुआ। पहला सवाल NRCVEE में शोधार्थी विक्की का था। उन्होंने बताया कि स्नातक और मास्टर्स, दोनों में गोल्ड मेडल जीतने के बाद भी वे हर पड़ाव पर यही सोचते रहे कि यह आखिरी है, और अब पीएचडी के बाद पोस्टडॉक के बारे में सोच रहे हैं। उन्होंने पूछा, "मैं अब भी संतुष्ट नहीं हूं। आखिर यह दौड़ खत्म कब होगी?"



'शाम 4 बजे तक मिलने के लिए नहीं मांगा गया था समय','इंडिया' गठबंधन के प्रदर्शन पर चुनाव...


'पाकिस्तान की 6 सैटेलाइट भारत पर रख रही नजर, समुद्र में भी बढ़ा खतरा'; पूर्व एयर मार्शल ...

जवाब में आचार्य प्रशांत ने कहा, "तुम बरसों से नियंत्रण कर रहे हो, और उस सारे नियंत्रण का नतीजा यह असंतुष्ट व्यक्ति है जो यहां खड़ा है।" उन्होंने कहा, "थोड़ा-बहुत पूर्वानुमान ठीक है। कल उड़ान है तो तूफान का पूर्वानुमान देख लेना समझ में आता है। लेकिन पूरी जिंदगी की योजना बना लेने का कोई मतलब नहीं है।"

इसके बाद आईआईटी मद्रास की छात्रा सौम्या ने परिवार की पाबंदियों का मुद्दा उठाया। उन्होंने पूछा कि जब समाज हर वक्त हमें प्रभावित कर रहा है, तो वे कैसे जानें कि आजाद होने की उनकी इच्छा भी समाज की ही दी हुई नहीं है। बातचीत आगे बढ़ने पर उन्होंने कहा कि पाबंदियां तोड़ने का असर उनके परिवार पर पड़ेगा। आचार्य प्रशांत ने कहा कि हम अक्सर इसे प्रेम का नाम देते हैं कि दूसरों को दुख नहीं देना चाहते, जबकि असल चिंता उन नतीजों की होती है जो हमें खुद भुगतने पड़ेंगे। उन्होंने कहा, "हर किसी से हर बात पर लड़ना जरूरी नहीं, जिंदगी इसके लिए बहुत छोटी है। लेकिन अगर कोई बात सचमुच मूल्यवान है, दिल की है, प्रेम और स्पष्टता की है, तो उसकी कीमत चुकाइए, खुशी-खुशी चुकाइए। किसी मूल्यवान चीज को जानते हुए भी उसकी कीमत न चुकाने का फैसला करना सरासर कायरता है।" यह बातचीत आसान सहमति पर खत्म नहीं हुई। छात्रा बार-बार पारिवारिक पाबंदियों की ओर लौटती रहीं और आचार्य प्रशांत उन्हें व्यक्तिगत चुनाव और उसकी कीमत के सवाल पर वापस लाते रहे। इसी दौरान आईआईटी दिल्ली के एक फैकल्टी सदस्य ने बीच में हस्तक्षेप किया। उनका कहना था कि आचार्य प्रशांत छात्रा के प्रति कठोर हो रहे हैं, और उन्होंने आग्रह किया कि छात्रा को अपना पक्ष रखने की पूरी आज़ादी दी जाए। आचार्य प्रशांत ने कहा कि यह उनके और छात्रा के बीच की बातचीत है, और चर्चा जारी रखी। बाद में एक अन्य प्रश्न के उत्तर में उन्होंने खुद कहा, "थोड़ी देर पहले लोग थे जो शायद नाराज़ भी हो गए थे।" सौम्या बार-बार पारिवारिक पाबंदियों की ओर लौटती रहीं और आचार्य उन्हें व्यक्तिगत चुनाव तथा उसकी कीमत के सवाल पर वापस लाते रहे; जब उन्होंने वास्तविक शारीरिक रोक-टोक की बात कही, तो आचार्य प्रशांत ने उसे दर्शन का नहीं बल्कि कानूनी अधिकार का मामला बताया।

दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा शिखा ने पूछा कि आज सुनी गई बातें भी कहीं एक और विचार बनकर उनके भीतर जमा तो नहीं हो जाएंगी। आचार्य प्रशांत ने हाथ में पकड़े मग का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि इस्तेमाल के बाद 100 ग्राम का मग बची हुई चीज़ की वजह से 101 ग्राम का हो जाता है, और उसे साफ करने के लिए डाला गया पानी-साबुन भी अगर उसी में रह जाए, तो सफाई का कोई मतलब नहीं। उन्होंने कहा, "ये शब्द आपको कुछ अतिरिक्त देने के लिए नहीं हैं। ये उसे घोलने के लिए हैं जो पहले से अतिरिक्त है, घोलकर बहा देने के लिए।"

शिखा ने इसके बाद भी कई बार पूछा कि आखिर यह होता "कैसे" है। आचार्य प्रशांत का जवाब था कि इसकी कोई प्रक्रिया नहीं है। उन्होंने कहा, "आपको इसे घटित नहीं करवाना है, बस इसके घटने में बाधा नहीं बनना है।"

सत्र के अंत में ग्रामीण राजस्थान से आईं एक हिंदी व्याख्याता ने सवाल पूछा। उन्होंने बताया कि वे करीब 400 किलोमीटर दूर से केवल एक सवाल पूछने आई हैं, और यहां उन्हें भाषा की बाधा भी महसूस हुई। उन्होंने कहा कि उनके इलाके में लड़कियां पर्दे के बिना घर से बाहर नहीं निकल सकतीं और बारहवीं के बाद ज्यादातर की शादी कर दी जाती है। उन्होंने पूछा कि ऐसे माहौल में वे ये बातें बच्चों तक कैसे पहुंचाएं। आचार्य प्रशांत ने कहा कि आईआईटी दिल्ली में ज्ञान की चर्चा इसलिए हो पा रही है क्योंकि यहां लोगों को अपनी बुनियादी जरूरतों की चिंता नहीं है। उन्होंने कहा, "जहां primary education मिलने का ही ठिकाना नहीं है, वहां मैं क्या उपनिषद की बात करूं? वहां उपनिषद की बात नहीं करूंगा। वहां उनके fundamental social rights की बात करूंगा।" उन्होंने यह भी कहा, "ज्ञान भी साधन ही है, साध्य नहीं है। साध्य मुक्ति है।"



तीसरा दौर: प्लेसमेंट, सोशल मीडिया, AI और गांधी पर सवाल

कार्यक्रम के अंतिम हिस्से में मैंने मंच पर आचार्य प्रशांत से हिंदी में बातचीत की। मेरा पहला सवाल था कि कैंपस प्लेसमेंट में अच्छा पैकेज मिलने पर छात्र को लगता है कि दुनिया उसकी मुट्ठी में है, तो क्या वाकई यही इंसान का

लक्ष्य होता है?

जवाब में आचार्य प्रशांत ने कहा कि ऑफर मिलने के बाद भी "यह तक तो निश्चित होता नहीं है कि आप join करने जाओगे तो joining मिलेगी कि नहीं मिलेगी।" उन्होंने कहा, "B.Tech हो गया है, job लग गई है तो basically नौवां semester शुरू हो गया है।" उनके मुताबिक, "सुख की समस्या यह थोड़े ही है कि मिलता नहीं। सुख की समस्या यह है कि मिलता इतना सा है, ललचाता इतना सारा है," और जब मिलता भी है तो असुरक्षा की छाया में मिलता है कि कहीं छिन न जाए।

जीवन के लक्ष्य पर एक और सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि लक्ष्य मुक्ति है, और "मुक्ति लक्ष्य इसलिए है क्योंकि दुख तथ्य है।" उनका कहना था कि कुछ नया हासिल करने से पहले उन चीजों और मान्यताओं पर पुनर्विचार करना होगा, जो पहले से हासिल हैं।

सोशल मीडिया और लगातार भटकते ध्यान पर मेरे सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, "social media ने मानव प्रजाति थोड़ी पैदा करी है। मानव प्रजाति ने social media पैदा कराया है, तो अगर social media में कचरा भरा हुआ है, जहर भरा हुआ है, तो वह जहर हमने उसको दिया है।" स्क्रॉलिंग कम करने का कोई फॉर्मूला पूछे जाने पर उनका जवाब एक शब्द का था: "आत्मसम्मान।" उन्होंने कहा कि जब जिंदगी में कुछ असली होता है, चाहे कोई व्यक्ति, कोई अच्छा काम, एक अच्छी किताब या ऊंचा संकल्प, तो स्क्रॉल करने का खयाल नहीं आता, जबकि "एक निरर्थक जिंदगी vacuum की तरह होती है जो अपने आसपास की हर चीज को सोखती है।" साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया, "social media के मैं खिलाफ नहीं हूं," और कहा कि जीवन सार्थक हो तो इसका इस्तेमाल भी सार्थक हो जाता है।

असफलता के डर पर मैंने पूछा कि कोई काम करने से पहले ही मन में डर बैठ जाता है, जिससे depression, anxiety और अकेलेपन जैसी भावनाएं आती हैं, तो क्या इसके लिए भी हम ही जिम्मेदार हैं? आचार्य प्रशांत ने बाहरी और भीतरी असफलता में फर्क किया। उन्होंने कहा कि बाहर की असफलता "random हो सकती है, situational हो सकती है", लेकिन जब वह भीतर की असफलता बन जाती है, तब वह हमारी जिम्मेदारी है। उनके मुताबिक असफलता का डर बाद में आता है, पहले सफलता की कामना आती है, और सवाल यह है कि "आपको किसने बता दिया कि फलानी चीज हासिल कर लोगे तो successful कहलाओगे?" एक अन्य जवाब में उन्होंने कहा कि आज दुनिया में "mental health epidemic चल रहा है।"

यह सवाल ऐसे समय उठा, जब 18 सितंबर को आईआईटी बॉम्बे के एक छात्र की कथित आत्महत्या के बाद वहां छात्रों ने विरोध-प्रदर्शन किए थे; मामले की पुलिस जांच चल रही है। लोकसभा के एक तारांकित प्रश्न (8 दिसंबर 2025) के लिए सभी आईआईटी से जुटाए गए आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2020-21 से 2024-25 के बीच 23 आईआईटी में 45 छात्रों की आत्महत्या दर्ज की गई, जिनमें छह मामले आईआईटी दिल्ली के थे। इसी अवधि में आठ अन्य अप्राकृतिक मौतें भी दर्ज हुईं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर मेरे सवाल के जवाब में आचार्य प्रशांत ने AI को "एक नई species" बताया, "जिसको इंसानों ने तैयार कर दिया है।" उनका तर्क था कि जो system किसी लक्ष्य के लिए बना हो, उसे अपने अस्तित्व की रक्षा करनी ही पड़ेगी, और इसी को वे चेतना से जोड़ते हैं। उन्होंने कहा कि असली सवाल यह है कि "वो जब जिंदा होगा तो उसके संस्कार कैसे होंगे", क्योंकि उसे training data के रूप में इंसानों का ही व्यवहार मिल रहा है। उनके मुताबिक, देशों के बीच प्रतिस्पर्धा के चलते कोई अपना AI विकास रोकने वाला नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे कोई देश अपना कार्बन उत्सर्जन नहीं घटाना चाहता। जब मैंने कहा कि यह तो बड़ी चेतावनी है, तो उनका जवाब था, "चेतावनी नहीं इसको। इसको आप भविष्यवाणी ही मान लो।"

गांधी जयंती से तीन दिन पहले हुए इस कार्यक्रम में मैंने आज के दौर में महात्मा गांधी की प्रासंगिकता पर सवाल पूछा। जवाब में आचार्य प्रशांत ने सत्याग्रह और अहिंसा की अपनी व्याख्या रखी। उन्होंने कहा, "सत्य कोई विषय नहीं, कोई वस्तु नहीं... कि आप हासिल कर लोगे। झूठ के खिलाफ विद्रोह ही सत्य है।" उनका कहना था कि अहिंसा दूसरे को दुख या चोट न देने का नाम नहीं है, बल्कि "अपनी ही जिंदगी बर्बाद न करने का नाम अहिंसा है।" गांधी के बारे में उन्होंने कहा कि वे "violent नहीं थे, लेकिन confrontational थे"। उन्होंने याद दिलाया कि गांधी अंग्रेजों के अलावा माउंटबेटन, जिन्ना और कांग्रेस से भी अड़ जाते थे, और दंगों के दौरान खुद जनता के सामने भी।

यह गांधी की अहिंसा की पारंपरिक व्याख्या से अलग एक दार्शनिक पुनर्पाठ था, जिसमें आचार्य प्रशांत ने अहिंसा को निष्क्रियता के बजाय सत्य के पक्ष में सक्रिय प्रतिरोध से जोड़ा।

इसके बाद एक छात्र ने माफी पर सवाल पूछा। आचार्य प्रशांत ने कहा कि माफ करने का मतलब यह नहीं कि गलत का विरोध न किया जाए, और विरोध करने के लिए व्यक्तिगत द्वेष पालना जरूरी नहीं। उन्होंने कहा, "भीतर से स्वस्थ रहो और बाहर संघर्षरत रहो। यही गीता है।"

पत्रकार की नज़र से

संवाद के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय की अनन्या सिंह ने बताया कि वे तीन साल से आचार्य प्रशांत की गीता कम्युनिटी से जुड़ी हैं, और आईआईटी मद्रास की सौम्या के सवाल में उन्हें अपनी छवि दिखी। नोएडा के एक इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र शुभम प्रशांतअद्वैत फाउंडेशन के बुक स्टॉल पर किताबें देखते मिले। उन्होंने कहा कि पढ़ाई और करियर पर आचार्य प्रशांत की बातें उन्हें उपयोगी लगीं, लेकिन यह अभी स्पष्ट नहीं हुआ कि इन्हें जीवन में उतारना कैसे है। भागलपुर से आए छात्र आत्मेश का कहना था कि गरीब इलाकों में पहली जरूरत प्राथमिक शिक्षा, अच्छे भोजन और स्वास्थ्य सुविधाओं की है, और उन्हें संदेह है कि वंचित इलाकों के लिए आचार्य प्रशांत के आध्यात्मिक विचार कितने उपयोगी हैं।

आईआईटी दिल्ली के अनुज ने कहा कि कई बार कोशिश करने के बाद भी उन्हें सवाल पूछने का मौका नहीं मिला। वे पूछना चाहते थे कि आचार्य प्रशांत ने खुद आईआईटी और आईआईएम से पढ़ाई की, कॉरपोरेट और सिविल सेवा में काम किया, और फिर बिल्कुल अलग रास्ता चुना। जिस करियर-दौड़ की वे आज आलोचना करते हैं, क्या उसकी समझ उन्हें खुद उस दौड़ का हिस्सा रहकर ही मिली? उन्हीं के बैच की वृंदा ने कहा कि आचार्य प्रशांत खुद सोशल मीडिया के जरिए करोड़ों लोगों तक पहुंचते हैं, जबकि इसी मंच पर उन्होंने सोशल मीडिया की सामग्री की आलोचना की।

पूरे सत्र में आचार्य प्रशांत का तरीका सवालों का सीधा समाधान देने से अधिक सवाल पूछने वाले की शुरुआती धारणा को जांच के दायरे में लाने का रहा; इससे कई संवाद लंबे खिंचे और कुछ प्रतिभागी अपने मूल सवाल पर बार-बार लौटते रहे।कुछ सवाल अंत तक खुले रहे। सबसे लंबी असहमति दिल्ली विश्वविद्यालय की शिखा के सवाल में दिखी। उन्होंने बार-बार पूछा कि यदि किसी तैयार प्रक्रिया का सहारा नहीं लेना है, तो यह परिवर्तन घटता कैसे है। आचार्य प्रशांत का उत्तर था कि इसकी कोई विधि नहीं है और व्यक्ति को "घटने में बाधा" नहीं बनना है। सवाल पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ; शिखा अलग-अलग रूपों में उसी ‘कैसे’ पर लौटती रहीं। राजस्थान से आईं व्याख्याता का यह सवाल भी खुला रहा कि ऐसी चर्चाएं उन इलाकों तक कैसे पहुंचें, जहां बुनियादी अधिकार ही अभी सवाल हैं।



लेखक के बारे में

रवीन्द्र सिंह

रवीन्द्र सिंह उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के रहने वाले हैं। उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी से MBA और गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी से मास कम्युनिकेशन में MA की पढ़ाई की है और पिछले 23 सालों से पत्रकारिता के क्षेत्र में हैं।साल 2002 में जैन टीवी से करियर की शुरुआत की। टीवी, रेडियो और डिजि ... और पढ़ें

कन्वर्सेशन शुरू करें | कमेंट पोस्ट करें

India

की ताजा खबरें, ब्रेकिंग न्यूज, अनकही और सच्ची कहानियां, सिर्फ खबरें नहीं उसका विश्लेषण भी। इन सब की जानकारी, सबसे पहले और सबसे सटीक हिंदी में देश के सबसे लोकप्रिय, सबसे भरोसेमंद

Hindi News

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म नवभारत टाइम्स पर

EXPLORE